RANI DURGAVATI VISHWAVIDYALAYA (RDVV), JABALPUR
MA QUESTION PAPER

जयशंकर प्रसाद JAISHANKAR PRASAD

नोटः सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। निर्धारित अंक प्रश्नों के सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) उषा सुनहले तीर बरसती जयलक्ष्मी-सी उचित हुई,
उधर पराजित कालरात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई।
वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का आज लगा हंसने फिर से,
वर्षा बीती, हुआ सृष्टि में शरद-विकास नये सिर से।

(अथवा)

सुना यह मनु ने मधु गुंजार मधुकरी का-सा जब सानंद,
किए मुख नीचा कमल समान प्रथम कवि का ज्यों सुन्दर छंद,
एक झटका सा लगा सहर्ष, निरखने लगे लुटे-से, कौन-
गा रहा यह संगीत? कुतूहल रह न सका फिर मौन।

(ख) पेशोला की ऊम्मियाँ है शान्त, घनी छाया में-
तट तरु है चित्रित तरल चित्र सारी में।-
झोपड़े बड़े है बुने शिल्प से विषाद केदग्ध अवसाद से।।
धूसर जलद खडू फट पड़े हैं,
जैसे विजयअनन्त में।

(अथवा)

कौन लेगा भार यह?
कौन विचलेगा नहीं?
दुर्बलता इस अस्थिमांस की –
ठोक कर लोहे से परख कर बज्र से
प्रलयोल्का खण्ड के निक्ष पर कस कर
चूर्ण अस्थिपुंज या हंसेगा अट्टहास कौन?
साधना पिशाचों की बिखर चूर-चूर होके
धूलि सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से,

(ग) शशि-मुख पर पूँघट डाले,
अंचल में दीप छिपाये।
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम आये।

(अथवा)

मेरे जीवन की उलझन,
बिखरी थी उनकी अलकें
पी ली मुध मदिरा किसने,
थी बंद हमारी पलकें?

2. जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय देते हुए उनकी काव्य-कृतियाँ लिखिए।

(अथवा)

आँसू की काव्यगत विशेषताएँ बतलाते हुए सिद्ध कीजिए कि प्रसाद ने 'आँसू में वेदना के अन्तर्गत यौवन की मस्ती के मादक चित्र अंकित किसे हैं?

3. प्रसाद जी के काव्य में मानव और प्रकृति का सौन्दर्य फूट पड़ा है इस उक्ति को ध्यान में रखते हुए प्रसाद की सौन्दर्य दृष्टि का विवेचन कीजिए। http://www.rdvvonline.com

(अथवा)

प्रसाद छायावाद के प्रेरणा स्रोत हैं, प्रमुख विशेषता का उल्लेख कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए।

(1) जयशंकर प्रसाद की काव्य भाषा।

(2) प्रसाद की अलंकार योजना।

(3) प्रसाद छायावाद के प्रेरणा स्रोत हैं।

(4) प्रसाद की दृष्टि में नारी की दृष्टि

(5) कामायनी आधुनिक युग का महाकाव्य है।

(6) प्रसाद उच्च कोटि के रहस्यवादी कवि हैं।

(7) छायावाद एवं प्रसाद की वैयक्तिता।

(8) निम्नलिखित को पूर्ण कीजिए

नारी तुम केवल..... हो विश्वास रजत ..... ।

.....स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर.....।

5. हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए।

(1) जयशंकर उच्च कोटि के रहस्यवादी थे।

(2) प्रसाद के काव्य में सर्वत्र मुहावरों का प्रयोग है।

(3) जयशंकर प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं।

(4) महाराणा का महत्व प्रसाद जी का नाटक है।

(5) कामायनी की नायिका श्रद्धा है।

(6) 'ऑसू' एक विरह काव्य है।

(7) कामायनी में प्रसाद की काव्य साधना चर्मोत्सर्ग पर है।

(8) प्रसाद छायाँवाद के प्रतिनिधि कवि है।

(9) लहर' जयशंकरे की प्रथम रचना है।

(10) प्रसाद की काव्यभाषा भोजपुरी है। http://www.rdvvonline.com

दोनों स्तंभों का मिलान कीजिए।

(क)	(ख)
(11) चित्राधार	1912
(12) कानन कुसुम	1906
(13) प्रेम पथिक	1915
(14) महाराणा का महत्व	1913

(15) करुणालय (गीति-नाट्य) 1925

(16) आँसू 1919

(17) झरना 1932

(18) कामायनी 1927

(19) लहर 1918

(20) छायावाद का आरम्भ 1932